

قرار لجنة المناقشة

نوقشت هذه الأطروحة (وقت إثارة الدفوع وتأثيره على الحكم الصادر - دراسة فقهية تطبيقية مقارنة بالقانون الأردني)، وأجيزت بتاريخ ٥/٨/٢٠٠٨م.

أعضاء اللجنة

- | | |
|--------|---|
| مشرفاً | الدكتور عدنان محمود العساف |
| | أستاذ مساعد في الفقه وأصوله |
| عضواً | الأستاذ الدكتور محمد القضاة |
| | أستاذ الفقه المقارن |
| عضواً | الدكتور نياض عقل |
| | أستاذ مشارك في الفقه المقارن |
| عضواً | الدكتور القاضي إيهاب أبو الهيجاء |
| | دكتوراه في الفقه وأصوله (دائرة قاضي القضاة) |

التوقيع

تعتمد كلية الدراسات العليا
هذه النسخة من الرسالة
التوقيع: التاريخ: ٥/٨/٢٠٠٨

١٢

١٣

١٤

١٥

١٦

١٧

١٨

١٩

٢٠

٢١

بعد الحمد والشكر لله أولاً وأخيراً.

-	..
	..
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
-	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	() :
	:
	.
	.
	.
	:
	:
	:
	() :
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
()	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
-	:
()	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
()	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
)	:
	(
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:

	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
	:
-	
-	

() : -

() : -

) : ()

) : () ()

: () : ()

: :

()

:

()

" " _____ ()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

()

..

:

:

" :

.. ()"

()

()

()

" :

"

"

"

()

()

()

()

:

:

:

" :

" (1)

" :

(2) ...

:

(

(

(

(

(

()

()

()

()

" : : "

"

()

" :

()"

:

" :

()"

:

(

(

-

-

()

()

()

_____ ()

" :

) : () :

) : () :

) : () :

) : () :

) : () :

() :

()

:

:

"

"

.

:

...

:

)
)
)
)
)
)
)
)
)
)

() ()

:

"

()"

" : : "

()"

" : ()"

() _____ ()

()

() ()

() ()

() ()

()

:"

()"

()

:

:

:"

()"

"

:

" ...

):

()

()

()

()

()

(

.)"

:

:

:

:

" :

.)"

()

()

()

()"

"

" : // ()

()"

:

:

:

:

()

:

()"

" :

" :

()"

()

()

()

()

()

"

"

()

()

()

()

()

()

()

:

:

:

:

()

:

()

()"

" :

:

:

:

:

:

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

....

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

)

(

)

()

()

(

"

()

"

)

()

)

(

"

(

"

()

()

: ()

()

()

()

()

()

- -

":

()"

::

::

()

"

()"

:

:

:

:

":

"

"

(

)

(

)

(

:

()

()

()

:

()

:()

:

" :

()"

()

_____ ()

()

()

":

()

()

()

()

()

()

()

":

: :

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

:

:

.

.

.

:

:

:

(-)

.()

:

:

.()

:

:

:

()

()

.()

()

()

()

)

(

()

()

()

(

)

() ()

() ()

()

)
(.

... .

(.)

: :
: :

" :

(.)"

(.)

(.)

:

)
)
)
)

()

()
* ()

()
:

::

::

::

::

::

()

*

()

()

()

:()

..

()
()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

()

=

()"

()

()

()

()

()

()

()

()

" :

()"

()"

()

"

()"

" :

()"

()

()

()

()

()

()

:

()

...)

()

" :

()"

:

:

=

"

:

()

()

()

()

()

" :

"

"

()

" :

"

"

()"

" :

()"

()
()
()

:
:
:
:

()

()

()

()

" :

" :

()

...

:

.

:

:

" :

()

...

:

()

()

()

()

:-

(-)

:

()

()

()

" :

()

....

()

()

()

()

()

()

" :

:

:

::

=

()
()
()
()
()
()

()

()

:

()

"

...

" ()" ...

()"

()

()

()

()

()

()

..

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

)

()

()

(-)

(-)

()

()

"

()"

()

:

:

()"

:

:

()

()

()

()

()

()

()

()

::

:

::

::

::

::

::

::

::

()

()

()

()

()

()

()

()

()
()

()
()
()
()

-

- -

()

:

()

()

()
 ()
 ()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

/// ()

:

()
()

.()

:

.()

.()

.()

() () () () ()

()

()

()

() () ()
() ()

//

() ()

()

()

()

()

_____ ()

()
()
()
()

()

· ·

() ()

:

()

()

:

()

()

()

()

()

:

.()

()

.()

.()

::

.()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

" :

() ()

()"

" : ()

()"

()

()

::

()

()

()

()

()

()

:

:

()

()

()

()

()

()

()

()

() ()
() ()

()

()

()

":

"()"

:

:

:

()

()

()
()

()

()

()

()

()
()

() :

:

() :

() :

() :

:

..*

:

() -

() -

() -

*

()

"

()ⁿ

()

()

()

()

()

()

"

()"

:

:-

()

()

()

()

()

()

()

()

:

:

:

()

"

()

()"

()

()

()

()

()

()

"

":

()"

()"

:

"

"

()

()

()
()

()
()
()
()

:

:

:

()

()

:

:

:

:

()

()

()

)

()

()

()

:

∴
:(...
∴
()

()
()
()
()

∴

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

(٤)

(٥)

(٦)

()

:

()
()
()
()
()

()

()"

"

() ()

() ()

()

"

()

()

()"

:

()

()

:

()

()

()

()

":

" ...

()

()

.

∴

":

()

."()

."()

":

()

∴"

()
()

()

:

:

:

:

):

()

()

":

.)"

:
":

:

()

٤٤٤

.)"

":

()

.)"

:-

()

()

()

()

()

()

()

" :

()

:

:

::

::
:
:
:

()

"

()

()

()

":

:

"

::

::

-

-

()

() ()

...

)

.()

:

.()

".

() ()

.()" "

:

...

()

()

()

()

:

()

()

()

": () ()

()

()

()
()
()
()
()

() :

()

()

()

:

()
()
()

()

::

::

()

()

" : () _____ ()

" ()

()

()

- -

:

()

-
-
-

:

:

()

()

()

:

()

()
()
()
()
()

()

()

()

()

..

..

..

..

..

"

"

()

:

:

.()

- . - " :

()

"

.()

::

:

:

:

- -

.()

:

:

:

:

"

:

.()"

()

()

()

()

()

:

:

:

:

:

:

()

()

()

-

.-

:

:

":

()

:

"

"

":

()

()

()

":

()

"

()"

"
"

//

:

:

":

()

"

"

()

":

()"

:

:

:

:

":

()"

()

()

()

()

"
()

:

-
-

()"

:

//

"

()

() () () ()
() () () ()

"

_____ ()

//

()
()

":

//

//

()

()

": // ()

: // ()

" "

()

()

()

: // ()

" "

" "

() :

()

": // ()

:

()

()

()

()

: (//)

"

()"

: // ()

"

()"

: ()

"

"

: // ()

"

:

()"

()

:

:

:

()

:

()

()

()

()

:

:

// ()

:
:

()

()

// ()

:

"

()

:

()"

:

// ()

"

"

()"

()
()
()

:

:

:

()

:

:

":

()

()"

"

()"

":

()"

":

()"

-
- ()
 - ()
 - ()
 - ()
 - ()

()

:

:

:

()

()

()

()

:

()

"

:

_____ ()

:

.

"

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

.

()

()

"

"

()

()

:()

:()

:()

:()

() ()

()

()

()

()

()

()

:()

:

:

:

()

:()

:

...*

()

:

-

-

()

*

//

()

//

()

"

() //

. // /

" :

"

()

()

:

()

:

()

()

()

_____ ()

//

//

:

()"

."

"()

()

"

."

()

: ."

()

:

::

": //

"(

)

(

()

":

."

()

/

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

: ()"

// ()

()"

// ()

// ()

()

()

" : ()

.()"

()

()

()

//

() ()

()

.()

" : // ()

.()"

:

:

() ()

∴

()

()

∴

" :

()

∴

()

()

()

()"

":

//

:

()

: () () ()
 " ()
 () () / / ()
 " : / /
 ()
 : : -
 " : () ()
 " : () ()
 ()

() () // () ()
" : () ()
()
()
()

-) .
(

_____)
" :)
" :)
" :)

" :)
" :)
" :)

" :)
" :)
" :)

" :)
" :)
" :)

() () / /
" //

" ()
()

()

)

()

:

:

_____ ()
" :
/ () () () ()
" : / ()
" : ()
" : ()
" : ()
" : ()

∴

()

()

()

() // ()

" ∴

()

"

()

//

//

()

()

()

()

"

"

::

()

::

::

()

:

()

()

//

()

:

()

()

:

:

:

:

" // ()

()"

()
()
()
()

// ()

// ()

" // ()

()"

()

" : // ()

. ()

:

:()

:

:

"

/ /

()"

()

()

()

()

()

" :

:

"

:

"

"

= =

" ()

:

:

//

"

....

....

()

()

" () "

()

()

"/ / ()
/ /

()

()

()

()

()

()

()

()

:

:

" : //

.()"

:

:()

:

:

// ()

- " :

.()"

()

()

()

//

()

//

()

" :

()

()

....

()

" / / ()
//
()

()

()"

" _____ () ()

": () ()

() ()

:

:

:

() ()

" : / / ()

()
" ()"

" : _____ ()

" ()

() // ()
" : () // ()
.....
()

.....
" : ()

" ()

())

() (/ / " :

()"

:

:

" : // ()

()"

()

()
()

:

:

()

// ()

()

":

."

()

()

()

.()

()

_____ ()

":

()

- -

:

:

:

:

() / / ()

// ()

// ()

": ()

"

"

()

// ()

":

_____ ()

"

: ."

()

" (//) (//) "

(//) (//) "

" "

:

()

.^()

:

:

()

// ()

":

//

....

.".....

": // ()

()

.".....

// ()

":

()

()

:

()

.. ()

)

(...

.. ()

..
..
..

()

// _____ ()

()

()

:

()

": // ()

()

//

()

.()"

" _____ ()

." ()

()

()

" : // ()

()"

" : // ()

()"

() ()

// () ()

()

" : // () ()

: "

()

": ()
" ()"

()
: " : //

:()
()

()
()

()"

" ()

(

()

": //

()

": / ()

()

()

()"

()

": // () "

()

()

()

// ()

":

. () "

. ()

// ()

:

. ()

. ()

// () ()

// () () () ()

()

/ / ()

()

∴

()

()

()

∴

∴

()

" : ()

"

()

" // ()

()

()

()

()

()

()

:

"

"

"

()

- / "

()

" : _____ () ()

."

":

()

()

."

()

()

()

()

()

:

:

:

":

//

()

"

()

()

"

()

()

:

:

":

//

()

(...)

)

()

()

()

()

:

()

:

":

()

() ()
() ()

:

:

:

:

// ()

":

." ()"

": // ()

." ()"

":

()

()

":

."()

:

:

// ()

":

."()

:

:

" // ()

() ()

"

()

.. ()"

" : // ()

.. ()"

∴
∴

// ()
()

// ()
" : //

()
()

()

//

."()"

()

": //

" ()

والله اعلم
بما كنا
نقصد

() ()

()

()

() ()

() ()

()

() ()

)

(

()

()

()

()

()

()

)

(

()

)

)

()

()

()

()

()

()

) ()

(

) ()

(

()

()

()

() ()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

()

(())

()

()

) (())

) (()) (

) (()) (

) (()) (

:

()

()

) () . : (

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()
//

()

()

()

()
()

)

()

(

()

()
()

(

()

(

)

()

)

(

DEFENSE TIMING AND EFFECTS ON PRONOUNCED JUDGMENT

Fiqh, Applicative, and Comparative Study with the Jordanian Law

By

Yousef Abdullah Mohammad Al-Shirifeen

Supervisor

Dr. Adrian Mahmoud Al-Assaf

ABSTRACT

In this thesis, I studied the timing of defenses in Islamic Feqeh and the techniques of civilian and legal trails to show the types of the defenses and to classify the minor defenses embodied in it, and to show the time of the minor defense and its effect on the time issued sentence.

This thesis mentioned the judicial applications issued by the Shar'eha appealing courts for the subjective and non-subjective defense related to the rights of Allah.

This study, in chapter one, defined defense linguistically and technically in the Islamic *fiqh* and law, described legitimacy of defense, types and bases. Chapter one was divided into two sections, one defined defense, legitimacy, bases and stipulations, and the other described defense types in the Islamic *fiqh* and civil law. Chapter two included three sections, the first demonstrated meritorious defense timing for the *Fuqaha'* and jurists in the *Sharia* Law, whereas section two dealt with timing of defense with contest (defense for non-acceptance) for *Fuqaha'* and jurists in the *Sharia* Law, section three addressed timing of the formal defense *Fuqaha'* and jurists in the *Sharia* Law. Chapter three included five sections, the first dealt with defending before second-degree course and possibility of defending with appeal separately, whether

- -

meritorious or formal defense, section two addressed defending following judgment pronouncement, and conflict with the case heard, whether such defense was meritorious or formal. This section also addressed in detail defending by protest, appeal, retrial, protest by other. Section three included practical applications of timing meritorious defense in accordance to orders decreed by the *sharia* court of appeal. Section four discussed practical applications of timing formal defense in accordance to orders decreed by the *sharia* court of appeal. Section five, on the other hand, presented practical applications of defenses initiated by the court (as related to rights of *Allah*) in accordance to orders decreed by the *sharia* court of appeal.